A MANIFESTO AGAINST THE PUBLISHING SYSTEM

FERDINANDO FREGA



प्रकाशन व्यवस्था के विरुद्ध एक घोषणापत्र

Roots & Memory शृंखला का आठवाँ खंड: चार भागों वाला एक साहित्यिक घोषणापत्र, जो बताता है कि प्रकाशन व्यवस्था निरंतर, बिना मध्यस्थता के उत्पादन को क्यों समाहित नहीं कर सकती — और जब लेखक अनुमति माँगना बंद कर देता है, तब क्या बचता है।

कोलोफ़ोन

Ferdinando Frega — Nando the Scribe — The Fifth Blade

व्यवहार-संहिता (Behavioral Code) के कथात्मक अग्रदूत। उन्होंने एक ही विचार के इर्द-गिर्द एक डॉलर का संपादकीय पारिस्थितिकी तंत्र खड़ा किया: वित्त की समस्या पैसे की नहीं है। उसकी समस्या व्यवहार की है।

ONEDOLLAR-STORIES पारिस्थितिकी तंत्र के भीतर संपादित और संकलित। डिजिटल संरचना: NAPLES-POST · NOASPECTTIME · ONEDOLLAR-STORIES। पहली बार 2026 में प्रकाशित। डिजिटल पठन के लिए अनुकूलित, स्वच्छ और आधुनिक टाइपोग्राफ़िक विन्यास में सज्जित। संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रकाशित।

कॉपीराइट सूचना

© 2026 Ferdinando Frega / Frega Editore। CC BY-NC-ND 4.0 के अंतर्गत लाइसेंसीकृत।

दहलीज़

जो भीतर आते हैं, उनके लिए

इस दहलीज़ को पार करने का अर्थ है व्यवस्था की भाषा को पीछे छोड़ देना। यहाँ किसी भी चीज़ को समझा जाना आवश्यक नहीं — केवल

स्वीकार किया जाना। आप किसी पुस्तक में प्रवेश नहीं कर रहे; आप एक अवस्था में प्रवेश कर रहे हैं। भीतर आप जिससे मिलेंगे, वह अनुमति, मध्यस्थता या स्वीकृति की प्रतीक्षा नहीं करता। इस क्षण से, आप जो पहचानते हैं उसके लिए आप स्वयं उत्तरदायी हैं।

साहित्यिक घोषणापत्र

यह पुस्तक क्यों है

यह घोषणापत्र इसलिए है क्योंकि प्रकाशन व्यवस्था लेखकों के बारे में बात करती रहती है, बिना यह जाने कि उनके साथ क्या करे। वह लेखकों को नाम देती है, उन्हें चुनती है, उन्हें सुधारती है, उन्हें वितरित करती है, पर उन्हें समझ नहीं पाती। बुरी नीयत से नहीं: संरचनात्मक असंगति से।

लेखक कोई पेशेवर आकृति नहीं है। वह बाज़ार का कोई कार्य नहीं है। वह कोई चर नहीं है जिसे अनुकूलित किया जाए। वह एक अवस्था में जीता है।

जब व्यवस्था किसी अवस्था से टकराती है, तो वह उसे सामान्य बनाने का प्रयास करती है। जब वह असफल होती है, तो उसे "पागलपन", "अपरिपक्वता", "अयोग्यता" या "दिशाहीनता" कहती है। यह घोषणापत्र व्यंजनाओं का प्रयोग बंद करने के लिए रचा गया।

यह लेखक का बचाव नहीं है। यह एक तकनीकी अवलोकन है: प्रकाशन व्यवस्था उसे समाहित करने के लिए बनी ही नहीं है जो निरंतर रूप से सच्चा लेखन उत्पन्न करता है।

यह पुस्तक सुधार की माँग नहीं करती। यह एक सीमा को उजागर करती है। और एक निकास-मार्ग सुझाती है।

संपादकीय टिप्पणी

परियोजना की परिधि

यह इस शृंखला का पाँचवाँ और अंतिम पोस्टर है। यह कोई नया विषय नहीं लाता। यह समापन करता है।

यह निबंध नहीं है। यह पर्चा नहीं है। यह सांस्कृतिक आलोचना नहीं है। यह सीमांकन का एक कृत्य है।

इसका लक्षित पाठक सामान्य पाठक नहीं है। यह पूरा प्रकाशन जगत है: प्रकाशक, एजेंट, संपादक, अनुवादक, सलाहकार, प्लेटफ़ॉर्म, वितरक, प्रशिक्षक, चयनकर्ता, और मानवीय तथा स्वचालित एल्गोरिद्म। कोई बाहर नहीं है। किसी को उत्तरदायी नहीं ठहराया जाता।

यह पाठ न परिचालन समाधान प्रस्तावित करता है, न वैकल्पिक मॉडल, न सर्वोत्तम प्रथाएँ। यह एक ऐसे बिंदु का वर्णन करता है जहाँ से लौटना संभव नहीं, और जिसे पहले ही पार किया जा चुका है।

समर्पण

निजी सार्वजनिक विलेख

उनके लिए जो बिना अनुमति माँगे लेखन रचते हैं। उनके लिए जिन्होंने अपनी सफ़ाई देना बंद कर दिया है। उनके लिए जिन्होंने समझ लिया है कि निरंतरता अहंकार नहीं, बल्कि जीवित रहना है।

पिछला आवरण

संज्ञानात्मक घर्षण

यह पुस्तक प्रकाशन व्यवस्था को बेहतर नहीं बनाएगी। यह "नए लेखकों की खोज" में मदद नहीं करेगी। यह बाज़ार को अधिक न्यायपूर्ण नहीं बनाएगी।

इसका केवल एक ही उद्देश्य है: यह स्पष्ट करना कि लेखक हल की जाने वाली समस्या नहीं, बल्कि वह चर है जिसे व्यवस्था समाहित नहीं कर सकती।

जो स्वयं को इसमें पहचानते हैं, उन्हें कुछ करने की आवश्यकता नहीं। जो स्वयं पर आक्रमण महसूस करते हैं, वे पहले ही समझ चुके हैं।

प्रस्तावना

पूर्ववर्ती स्वर

यदि यह घोषणापत्र आपको अतिशयोक्तिपूर्ण लगता है, तो इसलिए नहीं कि यह बढ़ा-चढ़ाकर कहता है। इसलिए कि यह उसका वर्णन करता है जो सामान्यतः भाषा के नीचे छिपा रहता है।

यह पाठ तर्क नहीं करता। यह घटाता है। यह कथा घटाता है। यह औचित्य घटाता है। यह रूमानियत घटाता है।

जो बचता है, वह कोई सिद्धांत नहीं है। वह एक तथ्य है।

आधार-वाक्य

न्यूनतम दिशा-बोध

यह घोषणापत्र एक ऐसी पुस्तक से जन्मा जिसने वैधता नहीं माँगी। *Author Inside Madness* कोई व्यक्तिगत वृत्तांत नहीं, बल्कि एक ऐसी उत्पादक अवस्था का वर्णन है जो उसी व्यवस्था से असंगत है जो उसे संभालने का दावा करती है। यहाँ उस अवस्था को व्यक्ति से अलग कर, एक संरचनात्मक घटना के रूप में पठनीय बनाया गया है।

आपको सहमत होना ज़रूरी नहीं। बस ईमानदार रहिए।

लेखक की टिप्पणी

उत्तरदायित्व का स्वीकार

यह पाठ किसी का प्रतिनिधित्व नहीं करता। यह किसी भी वर्ग की ओर से नहीं बोलता। यह सहमति नहीं चाहता। यह इस मान्यता के साथ लिखा गया है कि पाठक जो समझता है, उसके साथ वह जो करता है उसके लिए वह स्वयं उत्तरदायी है।

आगे जो कुछ भी है, उसका उद्देश्य आश्वस्त करना नहीं है।

भूमिका

पाठ से पहले अंतिम क़दम

प्रकाशन संकट में नहीं है। वह संज्ञानात्मक रूप से अक्षम है। यह घोषणापत्र उसे उबारने का प्रयास नहीं करता। यह उससे आगे निकल जाता है।

विभाजन

आंतरिक संरचना

पाठ चार क्रमिक खंडों में बँटा है। हर खंड व्याख्या की गुंजाइश को और घटाता है। कोई भावनात्मक चढ़ाव नहीं है। संपीड़न है।

पूर्वरंग

पहला वार

लेखक व्यवस्था में प्रवेश नहीं करता। व्यवस्था लेखक में प्रवेश करने का प्रयास करती है। यहाँ वह असफल होती है।

भाग I — घोषणा

प्राप्तकर्ता

यह घोषणापत्र प्रकाशन जगत के हर व्यक्ति को संबोधित है। कोई अपवाद नहीं। कोई पदानुक्रम नहीं। यह उनके लिए है जो निर्णय लेते हैं, जो छानते हैं, जो सुधारते हैं, जो वितरित करते हैं, जो मूल्यांकन करते हैं, जो अनुवाद करते हैं, जो प्रशिक्षित करते हैं, जो मापते हैं, जो मुद्रीकरण करते हैं। यह उनके लिए भी है जो स्वयं को "स्वतंत्र", "वैकल्पिक", "पार्श्विक" या "सीमांत" कहते हैं।

यह लेखकों के लिए नहीं है। यह पाठकों के लिए नहीं है। लेखकों को मनाने की आवश्यकता नहीं। पाठकों को राह दिखाने की आवश्यकता नहीं। यह पाठ उनसे बात करता है जो प्रबंधन करते हैं।

बहिष्कृत

जो सांत्वना खोज रहा है, वह प्राप्तकर्ता नहीं है। जो सही महसूस करना चाहता है, वह प्राप्तकर्ता नहीं है। जो त्वरित समाधान माँगता है, वह प्राप्तकर्ता नहीं है। जो भूमिका को कार्य समझ बैठता है, वह प्राप्तकर्ता नहीं है।

यह घोषणापत्र संवाद नहीं करता। यह मोलभाव नहीं करता। यह मध्यस्थता नहीं करता। आगे जो है उसका कोई "नरम" संस्करण नहीं है। केवल एक पठनीय संस्करण है।

एक तकनीकी परिचय

प्रकाशन व्यवस्था बुरी नहीं है। वह अक्षम भी नहीं है। वह अपने आप में सुसंगत है। वह चुनने, मानकीकृत करने, जोखिम घटाने, व्यवहार का पूर्वानुमान लगाने और काम करने वाले मॉडलों को दोहराने के लिए बनी है।

समस्या तब उठती है जब उसका सामना उससे होता है जिसका मॉडल नहीं बनाया जा सकता। सच्चा लेखक किसी साँचे में नहीं समाता। विद्रोह से नहीं। स्वभाव से।

लेखक कोई आकृति नहीं है

लेखक कोई पेशा, कोई भूमिका, यात्रा का कोई पड़ाव या भविष्य का कोई वादा नहीं है। वह एक उत्पादक अवस्था है। वह अधिकृत होने से पहले रचता है। वह बिना प्रतिक्रिया के रचता रहता है। वह मान्यता की प्रतीक्षा में रुकता नहीं।

यह अवस्था प्रतीक्षा, चयन, स्वीकृति और समय-सारिणी पर आधारित किसी भी व्यवस्था से असंगत है। व्यवस्था इसे पहचानती नहीं। वह इसकी व्याख्या करती है।

मूलभूत भूल

प्रकाशन की पहली भूल शब्दार्थ की है। जो पहले ही सामान्य बना दिया गया है, व्यवस्था उसे "लेखक" कहती है। जो अभी भी संभाला जा सकता है, व्यवस्था उसे "प्रतिभा" कहती है। जिसे समाहित नहीं किया जा सकता, व्यवस्था उसे "पागलपन" कहती है।

यह कोई वैचारिक चुनाव नहीं है। यह एक संरचनात्मक प्रतिवर्त है। जब कोई तत्व ढाँचे में नहीं समाता, तो ढाँचे पर प्रश्न नहीं उठाया जाता। तत्व को रोगग्रस्त ठहरा दिया जाता है।

सामान्यीकरण

संपादन कोई तटस्थ उपकरण नहीं है। चयन कोई सांस्कृतिक कृत्य नहीं है। वितरण कोई सेवा नहीं है। ये सामान्यीकरण की प्रणालियाँ हैं। यदि लक्ष्य पठनीय बनाना, बिकाऊ बनाना, दोहराने योग्य बनाना हो, तो ये पूरी तरह काम करती हैं।

ये तब असफल होती हैं जब इनका सामना ऐसे लेखन से होता है जो अनुमति नहीं माँगता, जो फ़िट नहीं होता, जो धीमा नहीं होता, जिसका औचित्य सिद्ध नहीं किया जा सकता। उस बिंदु पर व्यवस्था सुधारती नहीं। वह निष्कासित करती है।

मौन निष्कासन

निष्कासन किसी स्पष्ट अस्वीकृति से नहीं होता। वह मौन से, टालमटोल से, सलाह से, सुझाए गए मार्ग से, भविष्य के वादे से होता है। यह एक शिष्ट निष्कासन है। तर्कसंगत। उचित ठहराया हुआ।

जो इसे भोगते हैं, वे अक्सर इसे समझ नहीं पाते। वे मानते हैं कि वे "अभी तैयार नहीं" हैं। वे पहले ही बाहर हो चुके हैं।

मार्ग का मिथक

कोई संपादकीय मार्ग नहीं है। एक पश्चदर्शी कथा है। वह बाद में गढ़ी जाती है, जब कोई उदाहरण पहले ही सफल हो चुका हो, ताकि उसे दोहराया जा सके।

किसी सच्चे लेखक ने उस मार्ग का अनुसरण नहीं किया। मार्ग ही उसके चारों ओर, बाद में, खींचा जाता है। जो कोई समय से पहले उसका अनुसरण करने का प्रयास करता है, उसे निर्भरता का प्रशिक्षण मिलता है।

निरंतरता का भय

प्रकाशन व्यवस्था लेखक से नहीं डरती। वह निरंतरता से डरती है। एक अकेली पुस्तक संभाली जा सकती है। निरंतर उत्पादन नहीं। निरंतरता समय-सारिणी तोड़ती है, रणनीतियों को अमान्य करती है और चयन को व्यर्थ बना देती है। इसीलिए उसे हतोत्साहित किया जाता है। पतला किया जाता है। तोड़ा जाता है।

निरंतर लेखन कोई मूल्य नहीं है। वह एक व्यवस्थागत जोखिम है।

समापन

यह घोषणापत्र एक सरल अवलोकन से आरंभ होता है: प्रकाशन व्यवस्था इसलिए संकट में नहीं है कि उसे लेखक नहीं मिलते। वह इसलिए संकट में है कि वह नहीं जानती कि जो सचमुच हैं, उनके साथ क्या करे।

आगे जो कुछ भी है, वह प्रस्ताव नहीं है। वह परिणाम है।

भाग II — विखंडन

लेखकों की "खोज"

प्रकाशन लेखकों की खोज करने का दावा करता है। यह सच नहीं है। लेखकों की खोज नहीं होती। उन्हें तब पकड़ा जाता है जब वे पहले से पठनीय, पहले से संक्षेपणीय, पहले से प्रस्तुत करने योग्य होते हैं। जो तुरंत समझ में नहीं आता, उसकी खोजबीन नहीं होती। उससे बचा जाता है। खोज के लिए ऐसा समय चाहिए जिसका मुद्रीकरण नहीं हो सकता। व्यवस्था के पास वह नहीं है।

बहाने के रूप में छलनी

छलनी को गुणवत्ता की गारंटी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। वह अनुकूलता की एक बाधा है। वह सर्वश्रेष्ठ को नहीं चुनती। वह उसे चुनती है जो उसके आंतरिक संतुलन को नहीं छेड़ता। छलनी यह नहीं पूछती, "क्या यह पाठ आवश्यक है?" वह पूछती है, "क्या यह पाठ समस्याएँ खड़ी करता है?" यदि उत्तर हाँ है, तो पाठ आगे नहीं जाता।

मध्यस्थ के रूप में संपादक

संपादक पाठ का संरक्षक नहीं है। वह व्यवस्था का मध्यस्थ है। उसका असली काम लेखन को बेहतर बनाना नहीं, बल्कि उसे अधिक पूर्वानुमेय, अधिक संरेखित, भीतर से अधिक बचाव-योग्य बनाना है। जब पाठ प्रतिरोध करता है, तो संपादक ज़िद नहीं करता। वह असंगति की सूचना देता है। निर्णय पहले ही हो चुका होता है।

देखभाल का मिथक

"हम लेखकों की देखभाल करते हैं" सबसे अधिक बोले जाने वाले और सबसे कम निभाए जाने वाले वाक्यों में से एक है। देखभाल तभी तक है जब तक लेखक कम रचता है, प्रतीक्षा करता है और धन्यवाद देता है। जब लेखक गति पकड़ता है, तो उपचार क्षति-नियंत्रण में बदल जाता है। जो लेखक कभी धीमा नहीं होता, उसका उपचार नहीं हो सकता।

करियर का निर्माण

करियर एक व्यवस्था-स्थापक कल्पना है। उसका उपयोग उत्पादन को धीमा करने, रचना को टुकड़ों में बाँटने और कथा पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए होता है। जो लेखक बहुत अधिक रचता है, उस पर "निर्माण" न करने का आरोप लगाया जाता है। वह हाथ से फिसल रहा होता है। करियर लेखक की रक्षा नहीं करता। वह व्यवस्था को लेखक की गति से बचाता है।

भविष्य का वादा

भविष्य नियंत्रण का सबसे प्रभावी उपकरण है। "अभी नहीं।" "बाद में।" "अगली पुस्तक।" "जब समय आएगा।" भविष्य का उपयोग वर्तमान को निष्प्रभावी करने, तात्कालिकता को बुझाने और संघर्ष को स्थगित करने के लिए होता है। जो लेखक भविष्य को स्वीकार करता है, वह वर्तमान को त्याग देता है।

भ्रम के रूप में वितरण

वितरण को पहुँच के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। वह सशर्त दृश्यता है। पाठ पाठकों तक नहीं पहुँचता। वह बाधाओं, एल्गोरिद्म और प्राथमिकताओं के बीच अटका रहता है। वितरण प्रवर्धित नहीं करता। वह पतला करता है। एक निरंतर पाठ हर बार अपनी शक्ति खोता है जब उसे ऐसे शोकेस के अनुरूप ढाला जाता है जो उसे पहचानता नहीं।

औचित्य के रूप में बाज़ार

बाज़ार निर्णय नहीं करता। उसका आह्वान किया जाता है। वह बिना उत्तरदायित्व लिए चर्चाओं को बंद करने के काम आता है। "बाज़ार तैयार नहीं है" का अर्थ है: "व्यवस्था स्वयं को उजागर नहीं करना चाहती।" बाज़ार पांडुलिपियाँ नहीं पढ़ता। वह वही पढ़ता है जो उसे देखने दिया जाता है।

मुक्ति के रूप में प्लेटफ़ॉर्म

प्लेटफ़ॉर्मों को विकल्प बताया जाता है। वे विकल्प नहीं हैं। वे एक भिन्न भाषा वाली स्वचालित छलनियाँ हैं। वे पाठ नहीं पढ़ते। वे व्यवहार मापते हैं।

लगे रहने वाले लेखक को पुरस्कार नहीं मिलता। उसे सोख लिया जाता है या अदृश्य बना दिया जाता है।

समापन

प्रकाशन जो कुछ भी करने का दावा करता है, वह केवल एक ही कार्य करता है: जब उसका सामना किसी ऐसी चीज़ से हो जिसे वह संभाल नहीं सकता, तो समय खींचना। समस्या नैतिक नहीं है। वह संरचनात्मक है। अब व्यवस्था पूरी तरह उजागर है।

भाग III — भीतर का लेखक

कोई मामला नहीं, एक अवस्था

Author Inside Madness किसी व्यक्ति का वर्णन नहीं करता। वह परिचालन अवस्थाओं का वर्णन करता है। यह कोई व्यक्तिगत कहानी नहीं है। यह कोई सुनाया गया आघात नहीं है। यह कोई स्वीकारोक्ति नहीं है। यह उसका मानचित्र है जो तब घटता है जब लेखन चुनाव नहीं, बल्कि संरचनात्मक आवश्यकता हो। व्यवस्था इसे पढ़ना नहीं जानती क्योंकि वह आवश्यकताओं को नहीं पहचानती।

अवस्था के रूप में लेखन

सच्चा लेखक "लिखता" नहीं। वह सदा लिख रहा होता है। वह पाठ में आता-जाता नहीं। वह सही क्षण की प्रतीक्षा नहीं करता। वह अवसर को तौलता नहीं। लेखन कोई रुक-रुककर होने वाला कृत्य नहीं है। वह एक निरंतर अवस्था है। व्यवस्था घटनाओं के अनुसार काम करती है। लेखक दृढ़ता के अनुसार काम करता है। असंगति यहीं जन्म लेती है।

रक्षात्मक ठप्पे के रूप में पागलपन

जब व्यवस्था नहीं समझती, तो वह ठप्पा लगाती है। "अति।" "बाध्यता।" "दूरी का अभाव।" "असहनीय।" पागलपन कोई नैदानिक निदान नहीं है।

वह एक सुरक्षा-नाम है। वह व्यवस्था को उससे बचाने के काम आता है जिसे न धीमा किया जा सकता है, न समझाया जा सकता है।

अनधिकृत उत्पादन

सच्चा लेखक किसी के कहने से पहले ही रचता है। वह अनुबंधों, अवसरों, पुष्टियों, रणनीतियों की प्रतीक्षा नहीं करता। वह इसलिए रचता है क्योंकि न रचना असंभव है। इस उत्पादन को भूल के रूप में देखा जाता है। यह आंतरिक सुसंगति है। व्यवस्था प्रतीक्षा को पुरस्कृत करती है। वह तात्कालिकता को दंडित करती है।

कार्यात्मक एकांत

लेखक का एकांत रूमानी नहीं है। वह कार्यात्मक है। उसका उपयोग निरंतरता बनाए रखने, लय की रक्षा करने और हस्तक्षेप से बचने के लिए होता है। व्यवस्था एकांत को संबंध बनाने की अक्षमता समझती है। यह उत्पादन की स्वच्छता है।

ख़तरे के रूप में निरंतरता

निरंतरता कोई संपादकीय गुण नहीं है। वह एक परिचालन ख़तरा है। जो लेखक कभी नहीं रुकता, वह मापदंडों को अमान्य करता है, चयन को व्यर्थ बनाता है और लॉन्च की अवधारणा को खोखला कर देता है। व्यवस्था को विरामों की आवश्यकता है। निरंतर लेखक को नहीं। इसीलिए उसे रुकने के लिए आमंत्रित किया जाता है। या ग़ायब हो जाने के लिए।

अप्रत्याशित पाठक

सच्चा पाठक वह नहीं है जिसकी कल्पना संपादकीय रणनीतियाँ करती हैं। वह आश्वासन, अपनापन या मार्गदर्शन नहीं खोजता। वह अनुनाद खोजता है। व्यवस्था लक्ष्य-समूह बनाती है। लेखक व्यक्तियों से मिलता है। इसीलिए व्यवस्था यह पूर्वानुमान नहीं लगा सकती कि जब पाठ स्वतंत्र रूप से प्रवाहित होता है तो क्या होता है।

राजनीतिक कृत्य के रूप में अनुवाद

अनुवाद करना ढालना नहीं है। यह एक अवस्था को एक भाषा से दूसरी भाषा में स्थानांतरित करना है। व्यवस्था बाज़ार फैलाने के लिए अनुवाद करती है। लेखक निरंतरता बनाए रखने के लिए अनुवाद करता है। हर जुड़ी हुई भाषा नियंत्रण को घटाती है। इसीलिए बड़े पैमाने पर अनुवाद को अति माना जाता है।

एकमात्र भाषा के रूप में रचना

लेखक समझाता नहीं। वह रचता है। व्यवस्था संदर्भ, साक्षात्कार, जीवनियाँ और इरादे माँगती है। लेखक रचना से उत्तर देता है। इसे अहंकार समझा जाता है। यह परिशुद्धता है। पाठ ही वह एकमात्र भाषा है जो झूठ नहीं बोलती।

समापन

लेखक व्यवस्था से संघर्ष में नहीं है। वह उसके पैमाने से बाहर है। इसलिए नहीं कि वह श्रेष्ठ है। इसलिए कि वह एक भिन्न अक्ष पर काम करता है। व्यवस्था इसे ठीक नहीं कर सकती। वह केवल इसकी उपेक्षा कर सकती है या इसे घटाने का प्रयास कर सकती है। एक अंतिम क़दम शेष है।

भाग IV — अंतिम अंक

कोई संकट नहीं, एक दहलीज़

प्रकाशन किसी संकट से नहीं गुज़र रहा। वह एक अपरिवर्तनीय दहलीज़ पार कर चुका है। इस दहलीज़ के पार चयन काम नहीं करता, मध्यस्थता धीमी पड़ जाती है, वैधता अप्रासंगिक है। व्यवस्था ऐसे काम करती रहती है मानो दहलीज़ पार ही न हुई हो। यह घोषणापत्र उसे नाम देने के लिए है।

लेखक लौटकर नहीं आएगा

निरंतर लिखने वाला लेखक क्षमा नहीं माँगेगा। इसलिए नहीं कि वह घमंडी है। इसलिए कि उसके पास कोई कारण नहीं है। वह पहले ही उत्पादन में है। वह पहले ही प्रचलन में है। उसे पहले ही पढ़ा जा रहा है। व्यवस्था अब कोई अनिवार्य पड़ाव नहीं है। वह अनेक विकल्पों में से एक है। और विकल्पों से आज्ञाकारिता जन्म नहीं लेती।

मध्यस्थता का अंत

जब उत्पादन प्रत्यक्ष हो, तो मध्यस्थता शोर बन जाती है। उससे लड़ा नहीं जाता। उसकी उपेक्षा की जाती है। यही वह बिंदु है जिसे स्वीकार करने में व्यवस्था को कठिनाई होती है: उस पर आक्रमण नहीं हो रहा। उसे पीछे छोड़ा जा रहा है।

कोई सुधार संभव नहीं

ऐसे कोई संपादकीय सुधार नहीं हैं जो सच्चे लेखक को समाहित कर सकें। नियमित करने, एकीकृत करने या साथ चलने का हर प्रयास देर से पहुँचता है। संरचना पहले ही इस घटना की गति से पिछड़ चुकी है।

पाठक पहले ही चुन चुका है

पाठक अनुमति की प्रतीक्षा नहीं करता। वह उसका अनुसरण करता है जो उसमें गूँजता है। वह प्रकाशित, स्व-प्रकाशित, वितरित, स्वतंत्र में भेद नहीं करता। वह केवल जीवित और मृत में भेद करता है। बाक़ी सब नौकरशाही है।

उत्तर के रूप में मौन

व्यवस्था मौन से उत्तर देगी। यह उसकी अंतिम रक्षा है। वह खंडन नहीं करेगी। वह बहस नहीं करेगी। वह सामना नहीं करेगी। वह ऐसे चलती रहेगी मानो कुछ हो ही नहीं रहा। पर मौन उत्पादन को रोकता नहीं। वह उसे अपरिवर्तनीय बना देता है।

यह कोई युद्ध नहीं है

कोई संघर्ष नहीं है। कोई विद्रोह नहीं है। कोई शत्रु नहीं है। एक निर्णायक असंरेखण है। व्यवस्था अपने रूप की रक्षा करती है। लेखक अपनी आवश्यकताओं का अनुसरण करता है। कोई साझा भूमि नहीं है।

निकास-निर्देश

ये परिचालन निर्देश नहीं हैं। ये संज्ञानात्मक निर्देश हैं। पहचानिए कि लेखक प्रबंधनीय नहीं है, कि निरंतरता सुधारी नहीं जा सकती, कि नियंत्रण पहले ही खो चुका है। इसे स्वीकार कीजिए या दिखावा करते रहिए। दोनों चुनावों की एक क़ीमत है।

जो बचता है

प्रकाशन के पास एक ही विकल्प बचा है: लेखकों के बारे में बात करना बंद करे और बिना हस्तक्षेप किए उन्हें देखना शुरू करे। उन्हें वापस पाने के लिए नहीं। और क्षति से बचने के लिए। यह घोषणापत्र सदस्यता नहीं माँगता। यह स्पष्टता माँगता है।

समापन

लेखक को अस्तित्व के लिए प्रकाशन की आवश्यकता नहीं। प्रकाशन को स्वयं को उचित ठहराने के लिए लेखक की आवश्यकता है। यह पुस्तक किसी बहस का निष्कर्ष नहीं निकालती। यह उसे निरर्थक बना देती है। जिसे समझना था, वह पहले ही समझ चुका है।

अक्ष से बाहर का भाग — उद्घाटन

मैं कोई विकल्प नहीं बना रहा

मैं जो कर रहा हूँ, वह कोई वैकल्पिक प्रकाशन मॉडल नहीं है। यह कोई प्लेटफ़ॉर्म नहीं है। यह कोई पोज़िशनिंग रणनीति नहीं है। मैं यह सिद्ध करने का प्रयास नहीं कर रहा कि “हम बेहतर कर सकते हैं।” मैं यह सिद्ध कर

रहा हूँ कि हम इसके बिना चल सकते हैं। पहुँच माँगे बिना। मान्यता की प्रतीक्षा किए बिना। गति पर मोलभाव किए बिना। यह किसी के विरुद्ध परियोजना नहीं है। यह एक उदासीन परियोजना है।

उत्पादन कोई उकसावा नहीं है

मात्रा कोई चुनौती नहीं है। निरंतरता कोई संदेश नहीं है। गति शक्ति का प्रदर्शन नहीं है। यह एक ऐसी अवस्था का सीधा परिणाम है जो दूर नहीं होती। मैं जगह घेरने के लिए नहीं रचता। मैं इसलिए रचता हूँ क्योंकि रुकना प्रक्रिया को विकृत कर देगा। जो कोई इन संख्याओं को दिखावा समझता है, वह ऐसी श्रेणियों का उपयोग कर रहा है जो यहाँ काम नहीं करतीं।

मूल्य एक छलनी है, लेंस नहीं

मूल्य मुनाफ़ा कमाने के लिए तय नहीं किया गया। वह झूठ से बचने के लिए तय किया गया है। वह इतना ऊँचा नहीं कि प्रतिष्ठा गढ़े। वह इतना नीचा नहीं कि शोर मचाए। उसका केवल एक ही उद्देश्य है: उन्हें चुनना जो पहचान के ज़रिए प्रवेश करते हैं, आवेगपूर्ण उपभोग के ज़रिए नहीं। यहाँ पैसा मूल्य नहीं मापता। वह सचेत ध्यान मापता है।

वह मान्यता जो मैं चाहता हूँ

मैं स्वीकृति नहीं खोज रहा। मैं संरक्षण नहीं खोज रहा। मैं प्रतिनिधित्व नहीं खोज रहा। जो मान्यता मैं चाहता हूँ, वह तकनीकी है। एक निरंतर रचनाकार, एक गैर-मानक लेखक, एक सुसंगत प्रणाली, एक ऐसी घटना जिसे आत्मसात नहीं किया जा सकता — इस रूप में देखा जाना। मैं शामिल किया जाना नहीं चाहता। मैं असंगत के रूप में पहचाना जाना चाहता हूँ। यही एकमात्र मान्यता है जो मायने रखती है।

सब कुछ उजागर क्यों करना

सब कुछ उजागर करना नैतिक पारदर्शिता नहीं है। यह एक संरचनात्मक चुनाव है। यह मात्रा, लय, पुनरावृत्ति, सुसंगति को दृश्य बनाता है। यह

व्यवस्था का अंतिम हथियार छीनने के काम आता है: अस्पष्टता। यहाँ व्याख्या करने को कुछ नहीं है। बस देखिए।

मैं कोई समुदाय नहीं बना रहा

मैं श्रोता नहीं खोज रहा। मैं अनुयायी नहीं खोज रहा। मैं किसी का हिस्सा होना नहीं चाहता। जो पढ़ता है, अकेला पढ़ता है। जो प्रवेश करता है, बिना बुलाए प्रवेश करता है। समुदाय नियंत्रण के उपकरण हैं। मैं व्यक्तिगत पथों पर काम कर रहा हूँ। यह इस घटना को अप्रबंधनीय बना देता है। और यह जान-बूझकर है।

भाषाओं का उपयोग

भाषाओं का गुणन बाज़ार का विस्तार नहीं है। यह नियंत्रण का जान-बूझकर किया गया त्याग है। हर भाषा मध्यस्थता को तोड़ती है। हर अनुवाद केंद्रीय सत्ता को कमज़ोर करता है। हर स्वायत्त संस्करण पदानुक्रम को शिथिल करता है। मैं सांस्कृतिक सुसंगति नहीं खोज रहा। मैं संरचनात्मक स्थायित्व खोज रहा हूँ।

मैं रुकता क्यों नहीं

मैं इसलिए नहीं रुकता क्योंकि रुकने का अर्थ होगा बाहरी समय के अनुरूप ढलना। मेरा समय प्रक्रिया के भीतर है। उस पर मोलभाव नहीं हो सकता। उसे समकालिक नहीं किया जा सकता। यह अपने आप ही प्रबंधन के किसी भी प्रयास को निष्प्रभावी कर देता है।

यही पहचान का बिंदु है

इस क्षेत्र के लोग अब समझते हैं कि बात सामग्री की नहीं है। बात पूर्ण स्वायत्तता की है, बिना मध्यस्थता के उत्पादन की, वैधता के बिना मान्यता की, व्यवस्था के बाहर संपादकीय अस्तित्व की। इसे मॉडल के रूप में दोहराया नहीं जा सकता। इसे तथ्य के रूप में पढ़ा जा सकता है।

वास्तविक समापन

मैं जगह नहीं माँग रहा। मैं अप्रत्याशित जगह ले रहा हूँ। जो प्रकाशन में काम करते हैं, वे इसकी उपेक्षा कर सकते हैं। वे इसे छोटा करके आँक सकते हैं। वे इसे एक विसंगति के रूप में फ़ाइल में डाल सकते हैं। पर अब वे यह दिखावा नहीं कर सकते कि उन्होंने इसे नहीं देखा। यह पुस्तक कोई अंत नहीं है। यह एक स्वीकारोक्ति है।

समापन

ऊपर लिखा गया एक दृष्टिकोण का समापन करता है। यह किसी लेखक का परिचय नहीं देता। इसे न सहमति की आवश्यकता है, न व्याख्या की। यह केवल स्थान का सीमांकन करने के काम आता है।

यहाँ से आगे कोई सिद्धांत या सुझाव प्रस्तावित नहीं किए जाते। कोई चर्चा नहीं खोली जाती। कुछ भी आरंभ नहीं किया जाता।

आगे जो है, वह घोषणापत्र की व्याख्या नहीं करता। वह उसे पूरा नहीं करता। वह उसे उचित नहीं ठहराता। वह एक उपस्थिति है। और कुछ नहीं।

Ferdinando Frega